**भगत त्रिलोचन - सबद २**

**अंतरु मलि निरमलु नही कीना बाहरि भेख उदासी ॥**

**रागु गूजरी, भगत त्रिलोचन, गुरु ग्रंथ साहिब, ५२५**

अंतरु मलि निरमलु नही कीना बाहरि भेख उदासी ॥
हिरदै कमलु घटि ब्रह्मु न चीन्हा काहे भइआ संनिआसी ॥१॥
भरमे भूली रे जै चंदा ॥ नही नही चीन्हिआ परमानंदा ॥१॥ रहाउ ॥
घरि घरि खाइआ पिंडु बधाइआ खिंथा मुंदा माइआ ॥
भूमि मसाण की भसम लगाई गुर बिनु ततु न पाइआ ॥२॥
काइ जपहु रे काइ तपहु रे काइ बिलोवहु पाणी ॥
लख चउरासीह जिन्हि उपाई सो सिमरहु निरबाणी ॥३॥
काइ कमंडलु कापड़ीआ रे अठसठि काइ फिराही ॥
बदति त्रिलोचनु सुनु रे प्राणी कण बिनु गाहु कि पाही ॥४॥१॥

**सार:** उधार ली हुई आध्यात्मिक पहचान, पहली नज़र में आकर्षक लग सकती है लेकिन अक्सर यह किसी और की आध्यात्मिक यात्रा की गूँज मात्र होती है जिनका हमारे अपने अनुभवों से कोई वास्तविक संबंध नहीं होता। जब हम अपनी समझ को दूसरों के विचारों पर आधारित करते हैं तब हम निर्भर होने का ख़तरा उठाते है, हम असल समझ हासिल किए बिना, बस जटिलता की नकल मात्र करते हैं। उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति दया के बारे में बहुत अच्छे विचार व्यक्त कर सकता है लेकिन चुनौती मिलने पर उसकी झुंझलाहट यह दिखाती है कि वह दर्शन केवल ऊपरी तौर पर है, उसे पूरी तरह से अपनाया नहीं गया है। सच्ची स्पष्टता शब्दों को दोहराने या रस्म-रिवाजों से नहीं आती, यह तब आती है जब हमारा नज़रिया सीधा और बिना किसी मिलावट से मुक्त होता है। उस वास्तविक शांति की स्थिति में, जागरूकता अपने सबसे सच्चे स्वरूप में सामने आती है और हमें ऐसी समझ की ओर ले जाती है जो न केवल हमारे जीवन को, बल्कि हमारे आस-पास के लोगों के जीवन को भी समृद्ध बनाती है।

अंतरु मलि निरमलु नही कीना बाहरि भेख उदासी ॥
बाहर से वैराग्य का वेश धारण करने पर भी मन की अशुद्धि दूर नहीं होती। यह दिखावटी रूप और सच्चे आंतरिक बदलाव के बीच के अंतर को दर्शाता है।

हिरदै कमलु घटि ब्रह्मु न चीन्हा काहे भइआ संनिआसी ॥१॥
मन में विनम्रता और सर्वव्यापी ईश्वर को पहचाने बिना संन्यासी बनने का क्या लाभ। यह बताता है कि सच्चे संन्यासी के लिए केवल भौतिक चीज़ों को छोड़ना ही काफ़ी नहीं है बल्कि अहंकार और द्वैत का त्याग करना भी ज़रूरी है। (१)

भरमे भूली रे जै चंदा ॥ नही नही चीन्हिआ परमानंदा ॥१॥ रहाउ ॥
हे जयचंद (एक गद्दार राजा का ज़िक्र करते हुए), तुम भ्रम में भटक गए हो। यह उस मनोवृत्ति का प्रतीक है जो बाहरी स्वीकृति पाने के लिए अपनी नैतिकता से समझौता कर लेती है और भीतरी सत्य को नज़रअंदाज़ करती है। भीतरी संतुष्टि और असीम शांति की अवस्था में परम आनंद को न पहचान पाना। यह दर्शाता है कि शांति आंतरिक होती है और बाहरी दुनिया में ध्यान भटकने पर आसानी से छूट जाती है। (१)(विराम)

घरि घरि खाइआ पिंडु बधाइआ खिंथा मुंदा माइआ ॥
घर-घर से मिलने वाला खाना सिर्फ़ शरीर को पोषण देता है और धार्मिक वेश-भूषा और सजावट एक तरह का भ्रम है। यह विरोधाभास दर्शाता है कि संसार का त्याग करने वाले भी उसी समाज पर निर्भर रहते हैं जिसे वह त्यागने का दावा करते हैं।

भूमि मसाण की भसम लगाई गुर बिनु ततु न पाइआ ॥२॥
वैराग्य दिखाने के लिए श्मशान की राख शरीर पर लगाई जा सकती है लेकिन आध्यात्मिक समझ के बिना जीवन का असली सार नहीं मिलता। यह रस्म वैराग्य और नश्वरता का संदेश देती है लेकिन बिना आंतरिक स्पष्टता और आत्म-चिंतन के इन विचारों का कोई महत्व नहीं है। (२)

काइ जपहु रे काइ तपहु रे काइ बिलोवहु पाणी ॥
मंत्र जपने, तपस्या करने या पानी मथने का क्या फ़ायदा। इसका अर्थ है कि बिना आंतरिक गहराई के बार-बार की जाने वाली क्रियाओं से कोई सार नहीं निकलता, ठीक वैसे ही जैसे पानी मथने से कुछ नहीं मिलता।

लख चउरासीह जिन्हि उपाई सो सिमरहु निरबाणी ॥३॥
जिस शक्ति ने 'लाख चौरासी' पैदा किए हैं, उसका ध्यान करने से आत्म-ज्ञान मिल सकता है। 'लाख चौरासी' का यह ज़िक्र सृष्टि में मौजूद अनगिनत अवस्थाओं, रूप और अभिव्यक्तियों को दर्शाता है और हमें आत्म-चिंतन के ज़रिए अपने भीतर इन स्वाभाविक गुणों को खोजने और पहचानने के लिए प्रेरित करता है। (३)

काइ कमंडलु कापड़ीआ रे अठसठि काइ फिराही ॥
पानी का बर्तन या पैबंद लगे कपड़े साथ रखने या अड़सठ तीर्थ-स्थलों की यात्रा करने का क्या फ़ायदा है। यह उन परंपराओं और रीति-रिवाजों पर सवाल उठाता है जो विनम्रता, दया और समझदारी भरी सोच जैसे आंतरिक विकास को बढ़ावा नहीं देते।

बदति त्रिलोचनु सुनु रे प्राणी कण बिनु गाहु कि पाही ॥४॥१॥
त्रिलोचन कहते हैं, ज़रा सोचो, हे जीव, बिना अनाज के भूसी को पीटने से क्या हासिल होगा। यह इस बात का प्रतीक है कि बिना सार को पाए की गई कोशिशें और बिना आंतरिक समझ के किए गए बाहरी कर्म केवल अंततः शून्यता का खालीपन ही देते हैं। (४)(१)

**तत्त्व:** भक्त त्रिलोचन अत्यंत महत्वपूर्ण सत्य प्रकट करते हैं कि धार्मिक कपड़े, जगहें, प्रतीक या कर्मकांड ईश्वर का अनुभव नहीं करा सकते। यह भूसी को पीटने जैसा है जिससे कोई अनाज नहीं मिलता, यह बिना असली सार वाली कोशिशों और बिना आंतरिक समझ के बाहरी रीति-रिवाजों को दिखाता है। वास्तविक यात्रा आंतरिक है, अपने अंदर की शुद्ध-बुद्धि और अंतर्ज्ञान को जगाना। ज्ञान के बिना, त्याग भी एक भ्रम बन सकता है। वह साधकों को ऊपरी दिखावे से गहरी आंतरिक शुद्धि

की ओर ले जाते हैं और अंत में उस शाश्वत आनंद का अनुभव होता है जो सदा से भीतर ही विद्यमान था।

---

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

**Oneness In Diversity Research Foundation**

**वेबसाइट:** OnenessInDiversity.com

**ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com**